खरहे ने
चाहा सोना

अनुक्रम

खरहे ने चाहा सोना	2
छत्रक, उसके बच्चे और टोपियाँ	3
ऊदबिलाव	4
कैसे मदद करें भालू की?	6
कौन भला यह जानवर?	8
सारस	10
सारस ने खट्टा साग बटोरा	11
ख़रगोश और झींगा	12

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

: अशोक राजपथ, पटना, (बिहार)

ISBN : 978-93-5000-528-6

मूल्य : ₹ 30

लेखक : मि. स्तेलमाख

अनुवादक : मदन लाल 'मधु'

चित्रकार : व. सुतेयेव

संस्करण : 2011

Kharhe ne Chaha Sona

खरहे ने चाहा सोना

खरहे ने चाहा सोना।
जा बन में किया बिछौना।।
तकिया भी खुद ही लाया।
कानों को वहाँ टिकाया।।
पर कान बड़े थे खरहे के।
तकिये से नीचे लटके।।

छत्रक, उसके बच्चे और टोपियाँ

छत्रक गया दुकान पर।
रंग-रंगीली टोपियाँ
लाया कई ख़रीद कर।।
पहन उन्हें उसके सब बच्चे
खड़े हो गये पंजों पर।
ताकि सभी की पड़े नज़र।।
छत्रक बोला-"ए बच्चो,
खड़े न हो तुम पंजों पर।
पत्तों के नीचे तुम अपनी
टोपी और छिपा लो सिर!
वृक्षों के पीछे से बुढ़िया
चुपके-चुपके आये।
ले जायेगी तुम्हें तोड़ कर
बना शोरबा खाये।।"

ऊदबिलाव

ऊदबिलाव के पास तो
नहीं रसद की कमी।
जाड़े भर जिसको खाये
जब हो बर्फ़ जमी।।
चीज़ों का संचय घर में
चीज़ें तहख़ाने भर में
भरी हुई थीं बक्सों में।
डिब्बों में, सन्दूक़ों में।।

इसलिए कि फुर्ती बनी रहे
वह श्रम में अपने जुटा रहा।
वह काम-काज में डटा रहा।।
पहले तो करी जुताई।
फिर उसने करी बुवाई।।
तब फ़सल बटोरी उसने,
फिर जुटकर करी छँटाई।।
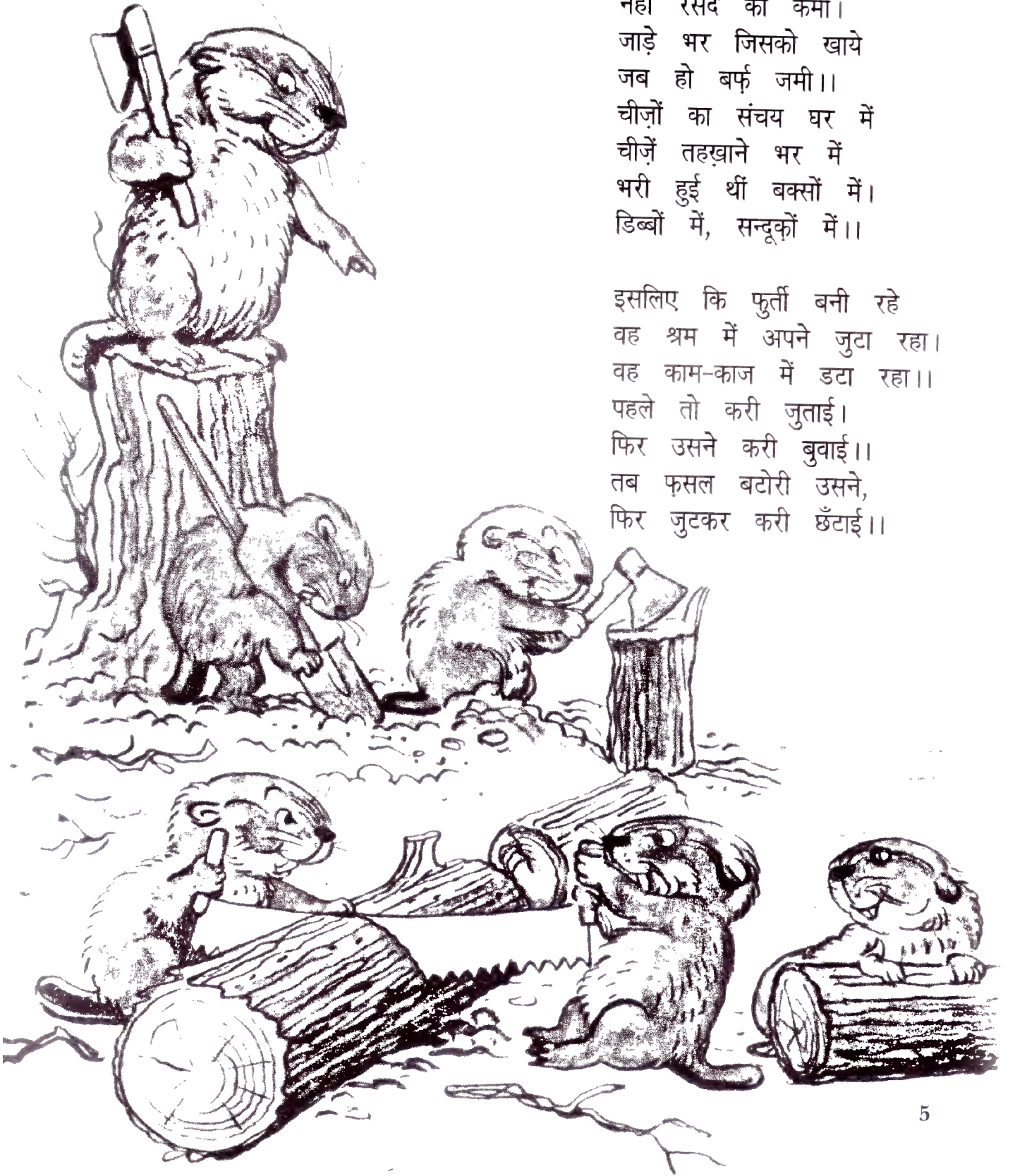
आराम ज़रा कर लेना
क्या इस में भला बुराई?
पर सदा काम करने में उसको
सुख मिलता है भाई।।
अपने नटखट बच्चों को
सिखलाता बाँध बनाना।
फ़न अपना जाना-माना।।

मादा ऊदबिलाव।
मन में लिये हियाव।।
अब पार नदी के जाती।
वह बढ़िया, ताज़ा खाना
नित प्रियतम को पहुँचाती।।

कैसे मदद करें भालू की?

जहाँ हिलें पतझर के पत्ते
फ़र की शाखायें सरसायें।
वहाँ उगायीं भालू ने मीठी रसभरियाँ
बच्चे खायें, मौज मनायें।

मगर हाय, रसभरियाँ थोड़ी
शाखायें मुरझाती जायें।
चला बाल्टी लेकर भालू, तीर नदी के
"चलो, वहीं से पानी लायें।"

भरी बाल्टी पानी से जब
तब तो नई मुसीबत आई।
टूटा हुआ तला था उसने
झटपट जल की धार बहाई...

भालू रोनी शक्ल बनाये।
खड़ा हुआ, कुछ समझ न पाये।।

वह क्या करे, बताओ अब तुम।
कैसे करे सिंचाई, बोलो?
इतना तो समझाओ अब तुम।।

कौन भला यह जानवर?

बर्फ़, बर्फ़ का ढेर
उस ने टाल छिपाई।
चरनी में
जंगल में
उस ने परत जमाई।
लेकर कोई पेटी
घुसा टाल में जाकर
कहीं बर्फ़ के अन्दर।।

वहीं बर्फ़ के नीचे
उस ने पेटी को साधा।
पूला भी उसने बाँधा।।
इस के बाद।
हुआ छपाक।।
चरनी में से
जंगल में से
पूला ख़ुद ही
भाग चला।

वह तेज़ी से भागा ...
यह देखो, यह उसका घर
बच्चे इसके अन्दर
दस्तक दी दरवाज़े पर
वह तो मूँछों वाला।
लम्बे कानों वाला।।
तिरछी आँखों वाला
गोरा उसका पेट मगर
कौन भला, यह जानवर?

सारस

जागा सारस सुबह-सवेरे।
घास भेड़ के लिए बटोरे।।
घास काटकर टाल जमायी।
उसने चरनी नयी बनायी।।
“भेड़ कि मेरे घर आना।
फूल बबूने के खाना।।
मीठी-मीठी घास जमाकर
चरनी को तो ख़ूब दिया भर
नहीं टाल में तुम घुसना।
टूटें सींग, ध्यान रखना।।”
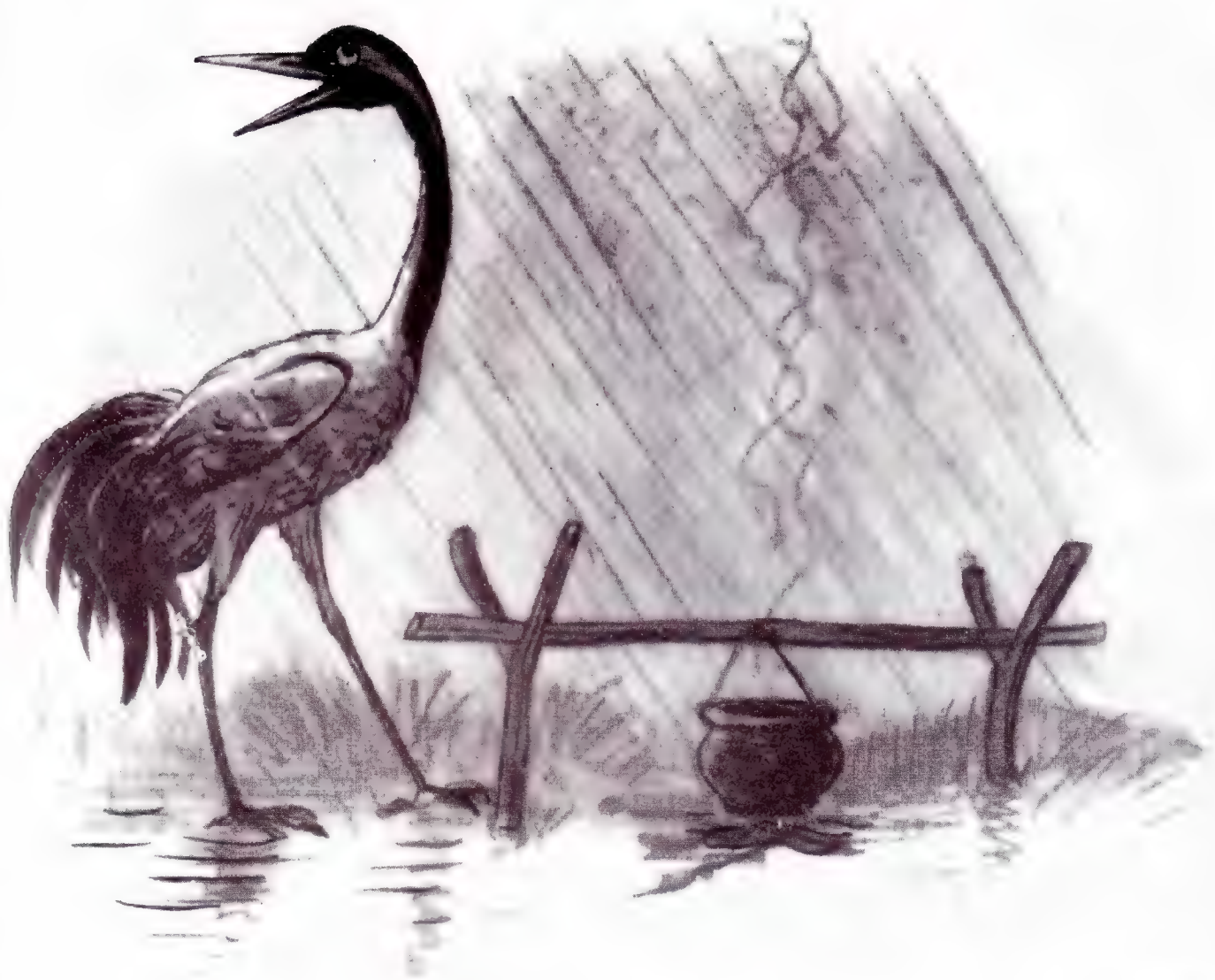
सारस ने खट्टा साग बटोरा

तड़के-तड़के सारस ने
साग बटोरा दलदल में
उसे आग पर जब रखा
बरखा आई उस पल में।
बारिश सारा साग साथ ले गई बहा।
सारस भूखा, और सूप के बिना रहा!
उसी वक़्त से, कभी न साग पकाता वह।
जैसे पाता, वैसे ही खा जाता वह।

खरगोश और झींगा

एक सुबह को, तड़के ही ख़रगोश उठा।
बर्फ़ ढके, फूले, फ़र तरु के पास गया।।
पहना उसने, फ़र का कोट श्वेत सुन्दर
घूमा औ' अपने पर डाली तनिक नज़र।।
मूँछों पर दे ताव, डींग अपनी हाँकी
"है पसन्द खरहे की तो सचमुच बांकी।
फ़र का कोट, ग़ज़ब की यह तो चीज़ अरे
जो यह पहने, वह पाले से नहीं डरे।।
दुख की केवल बात, पाँव ठिठुरे जायें।
गर्म बूट के बिना, चैन कैसे पायें?"

एक जानवर घूम रहा था पास वहीं।
बोला-"यह तो सचमुच कुछ भी बात नहीं!
गर्म बूट बनवा लो तुम, आर्डर देकर।
झींगा-मोची तो साढ़ई अपना दिलबर।।"

खरहे ने कुछ सोचा, नहीं, विचार किया।
वह पोखर की ओर उसी क्षण भाग लिया।।
किसी ठूँठ पर ऊँचे से, वह बैठा जा
और वहीं से वह बोला ऐसे चिल्ला–
"झींगे, झींगे, कहाँ छिपे आओ बाहर!
मैं मुश्किल में पड़ा, बचाओ तुम आकर
सी दो मुझ को, बढ़िया बूट नये सुन्दर
खुरियाँ हों जिसकी लोहे की बढ़ चढ़ कर।
और एड़ियाँ ऐसी हों, जो ख़ूब बजें।
लोमड़ियाँ सुन डरें और डर दूर भगें!"

पानी में से झींगे का आया उत्तर–
"मित्र बुलाते हो तुम मुझ को व्यर्थ मगर
जाड़े में तो मैं हर दिन सोया करता।
काम न करता, साफ़-साफ़ तुम से कहता।।
गर्मी में तुम पास अगर मेरे आते।
तुरत-फुरत ही बूट तुम्हारे बन जाते!"

लेकर गहरी साँस तभी बोला खरहा–
"गर्मी में तो बिना बूट भी बड़ा मज़ा।
मुझ को तब यह याद भला कैसे आता।
जाड़ा आता, तब तन को पाला खाता।।"
"अच्छा था यह ध्यान अगर पहले करते।
फिरते नंगे पैर न यों पाले मरते।
नमस्कार!" कर, वह पानी के बीच गया
पलक झपकते में वह जाने कहाँ गया...

लौटा अपना मुँह लेकर, वह क्या करता!
नंगे पैर अभी तक भी खरहा फिरता।।